''यीशु रोया''
(11:1-44)

1993 में बनी अंग्रेज़ी फिल्म ''शैडोलैंड्स'' में महान लेखक सी. एस. लूईस व जॉय ग्रेशम की कड़वी-मीठी प्रेम कहानी का वर्णन है। फिल्म के शुरू में, लूईस लोगों से भरे हॉल में कष्ट पर भाषण दे रहा था। वह उन्हें बताता है:

> दुख बहरे संसार के कान खोलने के लिए परमेश्वर का भोंपू है। ... हम पत्थर के टुकड़ों की तरह हैं जिनमें से मूर्तिकार मनुष्यों का रूप उकेरता है। हम पर पड़ने वाली उसकी छैनी की चोटों के घाव से ही हमें सिद्ध बनाते हैं।

फिल्म के मध्य में, लूईस की मुलाकात जॉय ग्रेशम से हुई और वह उससे प्रेम करने लगी। लूईस, जो कुंवारा था, पहले जॉय से केवल मित्रता ही करना चाहता था। एक दिन जब दोपहर बाद वे अपने कमरे में चाय पीने बैठे थे, तो जॉय अपना धैर्य खोकर लूईस पर टूट पड़ी। वह चिल्ला उठी:

> मुझे तो अभी पता चला है कि तुमने अपना जीवन केवल अपने लिए ही रखा है जिसमें कोई तुम्हें छू न सके। कोई भी जो तुम्हारे निकट आता है या तो वह तुमसे छोटा या कमज़ोर या तुम्हारे अधीन होता है।

धीरे-धीरे, लूईस को समझ आया कि भावनाओं और पीड़ा से जिस प्रकार उसने अपने जीवन को अलग कर लिया है, जॉय की बात सही थी। बाद में, जब जॉय कैंसर से पीड़ित होने के कारण अस्पताल में थी, तो लूईस ने उससे विवाह करने का प्रस्ताव रखा; और 1956 में वे पति-पत्नी बन गए। उनकी खुशी पर छाए रहने वाले कैंसर के बादल के बावजूद, उनके जीवन के अगले चार वर्ष खुशी-खुशी बीते। इस दौरान वे अपने घर की दीवार पर लगी एक पेंटिंग में दिखाई गई एक सुन्दर घाटी को देखने के लिए हनीमून पर चले गए। जब वे खेतों में से जा रहे थे तो बारिश होने लगी, सो उन्होंने एक छप्पर के नीचे आश्रय लेना चाहा जिसमें पशुओं का चारा रखा हुआ था। जब वे वहां बैठे हुए थे, तो जॉय अपनी भावी मृत्यु पर चर्चा करने की जिद करने लगी। गम्भीर स्वर में, उसने कहा:

> इस वर्षा के रुकने और घर जाने से पहले मुझे कह लेने दो। ... कि मैं मरने वाली हूं और तब भी मैं तुम्हारे साथ ही रहना चाहती हूं। ऐसा मैं केवल तभी कर सकती हूं यदि मैं अब तुम्हारे साथ बात कर पाऊं। ... मुझे लगता है कि अभी से इसका प्रबन्ध करने से सब ठीक हो जाएगा। मैं जो कहना चाह रही हूं वह यह है कि पीड़ा अब हमारी खुशी का एक भाग है। यही सौदा है।

बाद में, जब जॉय मर गई, तो उसकी कमी जॉय के आठ वर्षीय पुत्र, डगलस की तरह लूईस को भी सताने लगी। दोनों ही तब तक गुम सुम रहे जब एक दिन लूईस अटारी तक चलकर गया, जहां उस लड़के को अकेलापन अच्छा लगता था। लूईस को समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या बात करे, इसलिए वह उसके पास जाकर बैठ गया। इसके बाद उन दोनों में जो बातचीत हुई वह इस फिल्म का सबसे प्रभावशाली दृश्य था। लूईस ने डगलस को बताया कि काफी छोटी उम्र में ही उसकी भी मां मर गई थी, और वे मृत्यु पर चर्चा करने लगे:

> डगलस: क्या आप स्वर्ग में विश्वास रखते हैं?
> लूईस: हां, रखता हूं।
> डगलस: मैं स्वर्ग में विश्वास नहीं रखता।
> लूईस: अच्छा।
> डगलस: मैं निश्चय ही उसे फिर से देखना चाहूंगा।
> लूईस: मैं भी!

फिर, दोनों रोने लगे। लूईस ने लड़के को आलिंगन में ले लिया और दोनों मिलकर रोते रहे। फिल्म के अन्त में, लूईस गांव में से जा रहा था और डगलस पास के एक खेत में अपने कुत्ते के साथ दौड़ रहा था। स्पष्टत:, उनमें मित्रता तथा प्रेम बढ़ गया था। उस पीड़ा के कारण जो दोनों ने इकट्ठे सही थी, उनका सम्बन्ध सदा के लिए बदल गया था।

पवित्र शास्त्र के उस विशेष भाग, यूहन्ना 11:1–44 में जो कि इस अध्ययन का विषय है, यीशु के अपने प्रिय मित्र लाज़र की कब्र पर जाने की कहानी है। यह वह कहानी है जो बताती है कि किस प्रकार ''वचन देहधारी हुआ; और ... हमारे बीच में डेरा'' किया (1:14)। इस कहानी से हमें पता चलता है कि यीशु पीड़ा भरे संसार में प्रवेश करने, हमारे पास हमारे सबसे अंधकारमय समय में आने, और हमारे शोक में हमारे साथ बैठने के लिए अपनी इच्छा से आया था। वह हमें पीड़ा या कष्ट का कारण या पीड़ा का अर्थ बताने के लिए भाषण नहीं देता बल्कि हमारे आंसुओं में शामिल हो जाता है। इसमें हमें एक अनापेक्षित सांत्वना तथा परमेश्वर से गहरी संगति मिलती है।

यूहन्ना 11 अध्याय का अध्ययन कई तरह से किया जा सकता है, और इस पुस्तक में दो और पाठ पवित्र शास्त्र के इसी अद्‌भुत भाग के लिए समर्पित होंगे। अध्याय में से इस पहले सफ़र में, हम भावनाओं व संवेदनाओं के हवालों पर ध्यान केन्द्रित रखना चाहते हैं।

प्रेम

बैतनिय्याह वासी लाज़र बीमार हो गया, और उसकी बहनों मरियम और मरथा ने यीशु को खबर पहुंचा दी (आयत 1)। उन्होंने कहला भेजा, कि ''हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है'' (आयत 3)। पहली नज़र में यह भाषा अजीब लग सकती है। भला, क्या यीशु सबसे प्रीति नहीं रखता था? उसे ''जिससे तू प्रीति रखता है'' कैसे कहा जा सकता था? यीशु संसार में हर किसी से प्रेम करता था और करता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके विशेष मित्र नहीं थे। लाज़र, मरियम और मरथा का यीशु के लिए क्या महत्व था इसे जानने के लिए, अपने आपसे एक सीधा सा प्रश्न पूछें। यदि रात को दो बजे आपको अस्पताल में जाना पड़े तो आप किसे आवाज़ देंगे? यीशु तो निकट के इन तीन मित्रों को ही आवाज़ देता।

जब यीशु को उनका यह संदेश मिला, तो उसने अपने चेलों की ओर मुड़कर उन्हें आश्वासन दिया कि ''यह बीमारी मृत्यु की नहीं'' (आयत 4क), बल्कि ''परमेश्वर की महिमा के लिए'' थी (आयत 4ख)। यूहन्ना की अगली टिप्पणी इन तीनों के प्रति यीशु की विशेष भावनाओं का स्मरण दिलाती है: ''यीशु मरथा और उस की बहन और लाजर से प्रेम रखता था'' (आयत 5)।

दो दिन बाद, यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उन्हें लाज़र को देखने के लिए यहूदिया में जाना है। यह जानते हुए कि यहूदी अगुवे यीशु से कितनी घृणा करते थे और उसे मारना चाहते थे, चेलों ने उसे वहां न जाने के लिए समझाने की कोशिश की। पर, यीशु यह ज़ोर देकर कहता रहा, ''हमारा मित्र लाजर सो गया है'' (आयत 11ख)। यीशु की भाषा में फिर लाज़र और उसकी बहनों से उसकी विशेष संगति का संकेत है। जिस नींद की उसने बात की थी वह वास्तव में मृत्यु थी और बाद में उसने उन्हें खोलकर समझाया था ''कि लाजर मर गया है'' (आयत 14)। थोमा ने, जो इस बात से अवगत था कि यहूदिया में जाने का अर्थ उन सबकी मृत्यु है, कहा ''आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें'' (आयत 16)। उसके शब्दों में भय और विश्वास की मिलावट महसूस की जा सकती है।

निराशा

बैतनिय्याह में यीशु के पहुंचने के समय लाज़र की लाश को कब्र में रखे चार दिन हो गए थे। नगर में यीशु के प्रवेश करने पर मरियम ने सुना कि वह आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए भाग गई। उससे मिलकर वह कहने लगी, ''हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता'' (आयत 21)। पाठक को आज भी उसके शब्दों में निराशा का खतरनाक डंक ''सुनाई'' दे सकता है। किसी भी भाषा में ''यदि'' सबसे दुखद मनोभाव हो सकता है। लाज़र चाहे यीशु तक उसकी बीमारी की खबर ले जाने वालों के पहुंचने से पहले ही मर गया हो, पर मरथा अवश्य ही यीशु के देरी से आने पर दुखी हुई होगी। यीशु ने चुपचाप उसकी सुन ली। उसने उसे अपनी पीड़ा, उलझन और निराशा व्यक्त करने दी।

आंसू

यीशु से इतना कहने के बाद, मरथा अपने घर चली गई और जाकर चुपके से अपनी बहन को बताया, ''गुरु यहीं है, और तुझे बुलाता है'' (आयत 28)। बिना कुछ कहे, मरियम भागकर यीशु से मिलने चली गई। यह सोचकर कि वह कब्र पर रोने जा रही है, शोक करने के लिए यरूशलेम से बैतनिय्याह में आए यहूदी उन बहनों के पीछे चल पड़े।

अपनी उस बहन के विपरीत जिसने पहले अपने ऊपर काबू रखकर यीशु के सामने खड़े होकर बात की थी, मरियम यीशु के पास पहुंचकर, ''उसे देखते ही उसके पांवों पर गिर गई'' (आयत 32)। यीशु के कदमों पर मरियम का गिरना दिखाता है कि उसे किसी दिखावे या अहंकार की परवाह नहीं थी। उसके मन की पीड़ा उसकी हर भावना पर भारी पड़ रही थी। फिर, मरियम ने अपनी बहन के शब्द दोहराए, ''हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता'' (आयत 32)।

उसके बाद जो कुछ हुआ उसे कहानी का ''मुख्य भाग'' कहा जा सकता है। यूहन्ना ने लिखा:

> जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबराकर कहा, तुम ने उसे कहां रखा है? उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर देख ले। यीशु के आंसू बहने लगे [ROV; यीशु रोया](आयत 33-35)।

यूहन्ना ने कुछ ही शब्दों में परन्तु एक यादगार ढंग से, उन बहनों की पीड़ा के यीशु पर पड़े प्रभाव का वर्णन किया। वह ''बहुत ही उदास'' था। आज, हम कह सकते हैं कि उनकी पीड़ा ने ''उसे विवश कर'' दिया। उसने उनकी भावना को अपने मन में आने दिया। यीशु का रोना उन दो बहनों या शोक करने वालों के ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने जैसा नहीं था। यह सम्भवत: धीरे-धीरे सिसकी लेकर या जैसे किसी ने कहा है ''आंसुओं की धीमी-धीमी वर्षा'' की तरह है। नाइसा के ग्रेगरी ने लिखा है, ''आंसू तो आत्मा के घावों में लहू की तरह हैं।''[1] यीशु का मन उस दुखी परिवार और उनके साथ रोने वालों के लिए दुखी हो गया था।

देखने वालों ने कहा, ''देखो, वह उस से कैसी प्रीति रखता था'' (आयत 36)। कुछ लोगों का विचार है कि यूहन्ना दिखा रहा था कि यहां पर लोगों की भीड़ ने यीशु को कितना गलत समझा। मैं इससे असहमत हूं। मैं मानता हूं कि यूहन्ना ने संक्षेप में यह बताने के लिए कि वहां क्या हो रहा था, भीड़ के शब्दों का इस्तेमाल किया। ये लोग उसके प्रिय मित्र थे और उनकी क्षति उसकी क्षति थी।

यह पूछने के बाद कि उन्होंने लाज़र की लाश को कहां रखा है, यीशु कब्र पर चला गया। यूहन्ना ने इसके साथ यह जोड़ा कि ''यीशु मन में फिर बहुत ही उदास'' हुआ था । (आयत 38)।[2] जो प्रश्न हमें पूछना चाहिए वह यह है कि ''यीशु के आंसू बहने का क्या अर्थ था?'' क्या वह इसलिए रोया कि लाज़र मर गया था? निश्चय ही वह जानता था कि कुछ ही क्षणों में वह लाज़र को फिर से जिला देगा। क्या उसके आंसू दूसरों की पीड़ा देखने

के कारण निकले थे। परन्तु उसे तो पता होना चाहिए था कि उनका शोक शीघ्र ही एक बड़े आनन्द में बदलने वाला है जिसका उन्होंने इससे पहले कभी अनुभव नहीं किया था। कुछ लोगों का सुझाव है कि वह इसलिए रोया क्योंकि उसने अपने मित्रों में विश्वास की कमी देखी। पर यीशु ने तो अपनी सेवकाई में इससे भी अधिक अविश्वास देखा था, उसका रोना निश्चय ही उसकी आदत नहीं थी।

यीशु के गालों से टपकते आंसू यह दिखा रहे थे कि वह किस प्रकार पूर्ण मनुष्य था। सी. एस. लूईस की कहानी को याद करके, आप कह सकते हैं कि यीशु हमारे संसार में आया, हमारे साथ बैठा और रोया!

सारांश

डेमियन डि व्यूस्टर (1840–1889) अपने भाई के स्थान पर जिसे टायफाइड हो गया था, 1864 में मिशनरी बनकर हवाई नामक स्थान पर गया। उस टापू पर मिशन कार्य के कठिन नौ वर्षों के बाद, डेमियन ने मोलोकाय टापू पर जाने की इच्छा जताई, जहां कोढ़ी लोग जीने के लिए मजबूर थे। वहां उसने एक नर्स, एक भवन निर्माता, मिस्त्री, डॉक्टर, ठेकेदार, कफन बनाने वाले, और कब्र खोदने वाले के रूप में काम किया। उसने उस टापू पर दो अनाथालय भी बनाए। हर रविवार वह उन्हें वचन सुनाता था, वचन सुनाने से पहले वह हमेशा ''तुम कोढ़ी लोग जानते हो कि परमेश्वर तुमसे प्रेम करता है'' अवश्य कहता था। फिर एक दिन डेमियन ने देखा कि वह भी, कोढ़ की चपेट में आ गया है। अगले रविवार, कलीसिया में प्रचार करने के लिए खड़ा होकर उसने यह कहकर आरम्भ किया, ''हम कोढ़ी लोग जानते हैं कि परमेश्वर *हमसे* प्रेम करता है।''

लाज़र की कब्र के बाहर यीशु की तस्वीर को देखकर हमें ध्यान आता है कि यीशु को मनुष्य होने का पूरा अनुभव है। वह 50 प्रतिशत मनुष्य और 50 प्रतिशत परमेश्वर नहीं था। बल्कि वह 100 प्रतिशत मनुष्य और 100 प्रतिशत परमेश्वर था। यीशु *हमारी* दुनिया में आकर, *हमारी* पीड़ा को अनुभव करता है और *हमारे* साथ आंसू बहाता है, यह सब वह हम तक यह संदेश पहुंचाने के लिए करता है कि ''हम जानते हैं कि परमेश्वर *हम से* प्रेम करता है।''

पाद टिप्पणियां

[1]रिचर्ड फोस्टर, *प्रेयर* (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर, 1992), 37 में उद्धृत। [2]आयत 37 और 38 में इसी यूनानी शब्द *embrimaomai* का अनुवाद ''बहुत ही उदास'' किया गया है।